राष्ट्रीय
# सहारा
राष्ट्रीयता ■ कर्त्तव्य ■ समर्पण

■ देहरादून ■ नई दिल्ली ■ लखनऊ ■ गोरखपुर
■ पटना ■ कानपुर ■ वाराणसी से प्रकाशित

देहरादून
बुधवार • 2 जून • 2021
पृष्ठ 12, वर्ष-14, अंक 4918, मूल्य ₹ 3.00

# ग्रामीण अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य में दूध की भूमिका पर चर्चा

**उत्तरकाशी/एसएनबी।** विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद) के उत्तरकाशी जिले में स्थित कृषि विज्ञान केंद्र चिन्यालीसौड़ में विश्व दुग्ध दिवस पर आनलाइन मोड में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर ग्रामीण अर्थ व्यवस्था और मानव स्वास्थ्य में दूध की भूमिका के बारे में विस्तार से चर्चा की गई।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए केन्द्र के प्रधान वैज्ञानक एवं अध्यक्ष डा. चित्रांगद सिंह राघव ने विश्व दुग्ध दिवस को मनाये जाने के कारण तथा इसकी महत्ता पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था और मानव स्वास्थ्य में दूध की भूमिका पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि विश्व दुग्ध दिवस पहली बार 2001 में पूरे विश्व में मनाया गया और इस आयोजन में कई देशों ने भाग लिया। संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य और कृषि संगठन ने वर्ष 2001 में 1 जून को विश्व दुग्ध दिवस के रूप में चुना, जो आज डेयरी क्षेत्र में स्थिरता, आर्थिक विकास, आजीविका और पोषण में योगदान को सुनिश्चित करता है। उन्होंने कहा कि दुग्ध की बढ़ती मांग को देखते हुए पर्वतीय क्षेत्रों में युवा पशुपालन और दुग्ध उत्पादन को एक उद्यम के रूप में अपनाकर आय अर्जन का साधन बना सकते हैं। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता वरिष्ठ पशुचिकित्साधिकारी डॉ. राजा बाबू गुप्ता ने पशुओं के महत्वपूर्ण विषयों को प्रेजेंटेशन के माध्यम से समझाया। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि प्रसार डॉ. गौरव पपनै ने किया।